Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XIV, Issue No. 2, January-2018, ISSN 2230-7540

भाषा तथा संस्कार संचार के लिए अमृत

Deepak Rathee*

Assistant Director, Credes Media Solution Pvt. Ltd., New Delhi

----------X----------

हम अपने दैनिक जीवन में भाषा को संचार के पर्याय के रूप में पाते हैं। किन्तु भाषा संचार का एकमात्र साधन नहीं है। हम शारीरिक चेष्टाओं, मुखमुद्राओं एवं सहज वाचिक उत्तेजनाओं के द्वारा भी अपने विचारों एवं भावों को संचारित कर सकते हैं। संचार की ये विधियाँ भाषा से भी पुरानी तथा आज भी हमारे व्यवहार में प्रचलित हैं। जब व्यक्ति अपनी बात या विचार बोलकर नहीं कह पाता तो उसको इशारों की मदद लेनी पड़ती है। इसी के साथ यह भी माना गया है कि भाषा से कही गई बात की अपेक्षा इशारों को अधिक विश्वसनीय माना जाता है।

पतंजलि ने अपने महाभाष्य में प्रश्न किया कि क्या संकेतों एवं शारीरिक चेष्टाओं को शब्द माना जा सकता है। साथ ही उनका उत्तर था कि ये शब्द नहीं क्रियाएँ हैं। किसी समाज की मुख्य संचार–विधियाँ संकेत, इशारे एवं भाषा हैं। पुरातन समाज की अपेक्षा आधुनिक जीवन में विचारों को प्रकट करने के लिए भाषा का सहारा ज्यादा लिया जाता है। यही कारण है कि समाज वैज्ञानिक दृष्टि से भाषा को सर्वाधिक सुनिश्चित संचार व्यवहार की सर्वाधिक प्रचलित विधि की संज्ञा से अभिहित किया गया हैं। इसके दायरे में वे समस्त क्रियाएँ निहित हैं जिनके द्वारा कोई एक प्राणी दूसरे तक संवहन कराकर उसमें प्रतिक्रिया उत्पन्न करा पाता है।

1. The human factor may be essential in language, but not in communication generally glenson, H.R. introduction in descriptive liguisties, Revised Edition 1966p. 374

2. Language is the most explicit type of communication behaviour that we know of encyclopaildia of the social sciences, vol. IV p. 78

समाज के सभी सदस्य परस्पर संचार से जुड़ते हैं। यदि हम अपने विचारों को दूर तक पहुँचाना चाहते हैं तो इसके लिए ऐसे साधनों का प्रयोग करते हैं जिससे प्रेरणा लेकर अर्थ का उन्हें ज्ञान हो सके। अगर एक व्यक्ति अपने मन में ही बोलता है। वह संचार की पूरी प्रक्रिया नहीं हैं। यदि वह ज़ोर से भी बोलता हो तो वह भी संचार नहीं हैं। संचार के लिए यह जरूरी है कि श्रोताओं में प्रतिक्रिया उत्पन्न हो। सूचना का सही रूप में संचलन होना ही संचार हैं। इस तरह से समस्त व्यवहार संचरणीय है। जो यर्थायतः या सम्भाव्य रूप से एक प्राणी से दूसरे तक सूचना पहुँचाते हैं।

आधुनिक भौतिक वैज्ञानिकों तथा संचार कार्यकर्ता ने जिस संचार सिद्धांत का प्रतिपादन किया है। उसकी अपनी निम्नलिखित निश्चित योग्यताएँ हैं।

1. एच्छिक एवं पूर्वनिर्धारित संकेतो का समूह।

2. वह माध्यम जिससे संकेत भेजा जा सके।

3. संदेश को संकेतों द्वारा व्यक्त करने की प्रक्रिया

4. संकेत भेजने वाला।

5. संकेत पढ़ने की प्रक्रिया।

6. संकेत वाचक।

संचार की इस प्रक्रिया में संकेत भेजने तथा संकेत वाचन का काम मनुष्य या मनुष्य द्वारा बनाए गए ध्वनियन्त्र ही करते हैं। संचार सिद्धांत के अन्तर्गत परिभाषित एवं वर्णित संचारणीयता का यह आधुनिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी स्वरूप है। सम्प्रेषणीयता की बृहद परिभाषा के अन्दर प्रत्येक प्राणी अपने समाज में सम्प्रेषणीयता का व्यवहार करता है। जिस प्रकार एक पुरुष शारीरिक चेष्टाओं के द्वारा दूसरे पुरुष तक अपने मनोभावों को संचारित करता है उसी प्रकार पशु–पक्षी भी अपने समूहों में इसी प्रकार संचार करते हैं। पशु–पक्षी भी विभिन्न माध्यमों से अपनी भावनाएं एवं सुचनाएं का संचरण करते हैं। इस प्रकार संचार प्रक्रिया का प्रयोग मनुष्य एवं प्राणियों में होता हैं। प्रसिद्ध वैज्ञानिक संवाक ने प्राणी जगत के संचार व्यवहार के संकेतों के अध्ययन शास्त्र का नामकरण प्राणी संकेतविज्ञान (Zoosemiotics) किया है। मनुष्य एवं प्राणियों के संचार के विभिन्न व्यवहारों में ध्वनि, दृष्टि, गन्ध, आदि इन्द्रिय ज्ञान सम्बन्धी अनुभव पर आधारित साधनों का प्रयोग होता है। यह सत्य है कि संचार की कुछ विधियाँ मानव के अतिरिक्त अन्य जीवों में भी प्रयोग होती हैं वहीं कुछ ऐसी भी संचार विधियाँ जिनका प्रयोग मनुष्य जाति में ही होता है।

1. प्राणियों के संचार प्रकिया के साधन

अ) ध्वनि के बगैर

1) मुखमुद्राएँ

2) अन्य शारीरिक अंगों का विक्षेप

www.ignited.in

3) इन्द्रिय इंगित

2) ध्वनि के साथ (सहज वाचिक उत्तेजनाएँ)

2. मानव द्वारा संचार प्रकिया के साधन

1) बगैर ध्वनि, 2) शारीरिक चेष्टाएँ, 3) मुख मुद्राएँ, 4) अन्य शारीरिक अंगो का विक्षेप, 5) इंद्रिय इंगित, 6) अन्य, 7) लिखकर, 8) वर्णन करके, 9) चित्र द्वारा, 10) चिन्हों द्वारा, 11) अलिखित, 12) ध्वनि के साथ, 13) मानव वागेन्द्रियों द्वारा उच्चरित, 14) भाषा, 15) भाषेतर उच्चारण, 16) अन्य साधनों द्वारा

1) प्राणियों के संचार प्रकिया के साधन

मनुष्य एवं मनुष्य के साथ रहने वाले प्राणियों के संचार व्यवहार की दो मुख्य विधियाँ हैं।

1) ध्वनिरहित संचार

2) ध्वनिसहित संचार

1) ध्वनि रहित संचारः– इसके मुख्य तीन प्रकार है।

1. मुखमुद्राओं द्वारा
2. अन्य शारीरिक अंगों के विक्षेपों द्वारा
3. इन्द्रिय इंगितों द्वारा

1) मुखमुद्राओं द्वाराः– मुँह के हाव–भाव दिल की बात कहते हैं। मानव के विषय में साहित्यकारों ने इन हाव–भावों का अध्ययन विस्तार से किया है। लज्जा एवं शर्म से गालों का लाल होना तथा क्रोध में भोहों का चढ़ जाना आम बात है। दिल की प्रसन्नता के समय मुँह की जो मुद्रा होती है वह गहन विसाद के समय नहीं होती। मुँह की इन मुद्राओं का अन्तर मानव ही नहीं पशु–पक्षियों के चेहरों की भाव–भंगिमाओं में भी होता है। गाय की बछड़े को दुलारते समय जो मुख मुद्रा होती है वह क्रोध के समय बदल जाती है।

2) अन्य शारीरिक अंगो के विक्षेपों द्वाराः– मुखमुद्राओं के अलावा शरीर के दूसरे अंगो का विक्षेप भी विचारों एवं भावों को अभिव्यक्त कर देता है। जैसे विशेष परिस्थितियों में एक नायिका की आँखों में आँसू तो आते ही है पूरा शरीर रोमांचित, कम्पित तथा पसीना–पसीना भी हो जाता है। मानव के इन सहज, स्वाभाविक, अप्रयत्नव, शारीरिक विक्षेपों को नाट्य शास्त्रकार ने सात्विक अनुभव के नाम से पुकारा है। साहित्य वेताओं ने इनके अन्तर्गत स्तम्भ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, कम्प, वैवर्ण्य, अश्रु तथा प्रलय को रखा है।

पशु–पक्षियों के अंग–विक्षेपों का ज्यादा विश्लेषण नहीं हुआ है। यह यकीनन है कि कुछ पशु और पक्षी भी अंग विक्षेपों के द्वारा अपनी सहयोगियों में सूचना का संचरण करते है। 1946 में वान फ्रिस्क ने यह सिद्ध कर दिया कि मधुमक्खियों का नृत्य सूचना प्रदान करने का साधन है। मधुमक्खियाँ अपने नृत्य से मकरंद अथवा पराग के क्षेत्र की दूरी एवं दिशा की सूचना परस्पर देती है। एक मधुमक्खी क्षेत्र से थोड़ी सी मात्रा में मकरंद या पराग अपने छत्ते पर लाती है तथा वहाँ नृत्य की गति एवं आवृति के द्वारा शहद के क्षेत्र की सूचना अन्य मधुमक्खियों को प्रदान करती है। मकरन्द या पराग का क्षेत्र छत्ते से जितना ज्यादा निकट होता, नृत्य की गति उतनी ही तीव्र होती है तथा जितना ज्यादा दूर होता है वह गति उतनी ही धीमी होती है। छत्ते से पराग के क्षेत्र की दूरी यदि 100 मीटर होती है तो प्रति मिनट नृत्य की आवृतियाँ 38 होती है तथा दूरी यदि 6 किलोमीटर होती है तो प्रति मिनट नृत्य की आवृतियाँ 8 होती है। यदि क्षेत्र की दूरी 75 मीटर से अधिक होती है तो वह उसकी दिशा की सूचना अपने शरीर के पिछले भाग के उदर की टेढी–मेढी गति के द्वारा दे देती है। मधुमक्खियों के इस नृत्य के सम्बन्ध में हाकिट ने विवेचना की है कि मधुमक्खी के नृत्य की गति तथा आवृतियों से उसकी अर्थ–बोधकता का सम्बन्ध याछृच्छिक नहीं हैं अपितु वंश परम्परा से सम्बन्धित हैं। मधुमक्खियों को इसका नैसर्गिक ज्ञान होता है।

टिन बर्गन ने पशुओं के सामाजिक व्यवहार का अध्ययन करते समय यह माना है कि उनकी विभिन्न शारीरिक चेष्टाएँ परस्पर तदनुरूप उत्तेजनाओं को जागृत करती हैं।

3) इंद्रिय इंगितों द्वाराः– नाक के द्वारा सूंधकर बहुत से पशु अपनी इच्छा को संचारित करते हैं। स्पर्श इन्द्रियों के द्वारा प्रत्येक प्राणी संचारणीय व्यवहार करता है। शरीर का स्पर्श मन की बात कह देता है। नेत्रों के द्वारा भी बात कही जा सकती है। नेत्रों का अध्ययन मनुष्य के विषय में विशेष रूप से हुआ है। बिहारी के नायक एवं नायिका भरे भवन में नैत्रों से बात करते हैं।

2) ध्वनि सहित (वाचिक सहज उत्तेजनाएँ):– सहज वाचिक उत्तेजनाओं के द्वारा बिना प्रयास के ही मन की भावना प्रकट हो जाती है। आदिम स्थिति से ही मनुष्य चीखता, कराहता अट्टहास करता। हाथी चिघांड़कर, शेर दहाड़कर, धोड़ा हिनहिनाकर, गधा रेंककर, गाय रंभाकर, बकरी मिमियाकर कर, कोयल कूककर, कुत्ता भोंककर, मेंढक टर्राकर और मच्छर भिनभिनाकर अपनी अभिव्यक्ति जाहिर करते हैं। जंगल में शेर की दहाड़ सुनकर न जाने कितने पशु भयभीत हो जाते है। हिरन तथा अन्य पशु किसी भी आने वाले खतरे को देखकर चिल्लाने लगते है। एक हिरन की उस चिल्लाहट भरी आवाज के अर्थ को दूसरे हिरन समझ जाते है। एक चिड़िया अगर बिल्ली को देख ले तो विशेष प्रकार की आवाज करती है। जिसको देखकर आस–पास की चिड़ियाएँ उड़ जाती है। यौन–आमन्त्रण के समय भी पशु तथा पक्षी विशिष्ट प्रकार की आवाजें करते है।

हाकिर ने लंगूरों की संचारणीयता का अध्ययन करते समय विवेचित किया कि वे मुखमुद्राओं एवं संकेतों के अतिरिक्त वाचिक ध्वनिक आवाजों के द्वारा भी परस्पर व्यवहार करते है।

2) मानव द्वारा संचार के साधन

अ) ध्वनि के बिना

1) शारीरिक चेष्टाएँ:– मानव जहाँ सहज शारीरिक चेष्टाओं के द्वारा संचार करता है वहीं उसने अपने सामाजिक जीवन में यादृच्छिक शारीरिक चेष्टाओं को विशिष्ट अर्थ प्रदान किए है। उदाहरण के रूप में जहाँ मुँह का लाल होना या प्रफुल्ल हो जाना, जीवों के संचार के साधनों के अन्तर्गत समाहित है। वहीं मुँह को धुमाकर स्वीकृति अथवा अस्वीकृति का द्योतन कराना मानव की विशिष्ट संचार विधि है। इसी तरह कम्प, स्तम्भ, रोमांच आदि, अंग–विक्षेप जीव संचार प्रक्रिया के साधनों के अन्तर्गत आते हैं, वहीं हाथ हिलाना, हाथ मिलाना, हाथ जोड़ना, हाथ उठाना, हाथ दिखाना, आदि के द्वारा मानव की विशेष संचार–विधियाँ हैं। इंद्रियों द्वारा सहज व्यवहार भी मानव की संचार प्रक्रिया में आते है। वहीं आंख मारकर अपनी बात कहना भी मानव की विशेष संचार विधि का उदाहरण है।

2) अन्य:– सम्प्रेणीयता के ध्वनि रहित साधनों में मानव ने जहाँ शरीर के विभिन्न अंगों एवं इद्रियों के विविध कार्य–व्यापारों को निश्चित अर्थ प्रदान किए है वहीं संचार के अन्य साधनों का विकास किया है। इसके भी दो प्रकार है।

1) लिखित

2) अलिखित

अ) लिखित:– मानव ने लेखन कला के विविध रूपों द्वारा संचारणीयता के साधनों का विकास किया है। इसके तीन मुख्य प्रकार है।

1) वर्णात्मक

2) चित्रात्मक

3) चिह्नात्मक

1) वर्णात्मक:– भाषा को लिखने के लिए मानव ने अलग–अलग ध्वनियों को अलग–अलग वर्णो से लिखना आरंभ किया। आज का मानव लिपि के द्वारा अपनी बात को दूर दूर तक पहुँचा देता है। सम्प्रेषणीयाता के इस साधन का दिन प्रतिदिन प्रसार हो रहा है। इसके द्वारा हम किताबों, अखबारों, व्यक्तिगत पत्रों आदि के द्वारा सूचनाएँ प्राप्त करते हैं।

2) चित्रात्मक:– हम, चित्रों, रेखाचित्रों के द्वारा बिम्ब को ग्रहण कर लेते है। महिला तथा पुरुष के विभिन्न शोचालयों का बोध कराने के लिए द्वारों पर महिला तथा पुरुष के चित्र बना दिए जाते है। रेखागणित की रेखाएँ विषय के जानकारों को विषयगत विवेचना करने का माध्यम प्रदान करती है।

3) चिह्नात्मक:– मानव ने अनेक प्रकार के चिह्नों को अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में अपनाया है। बहुत से चिन्ह वस्तु के तदनुरूप प्रतीक होते हैं तो बहुत से पूर्णतः याछच्छिक। सड़कों पर परिवहन के चिह्न वहाँ आने वाले मार्ग के मोड़ की सूचना देते है। वहीं तीर का निशान हमें दिशा का निर्देश कराता है। व्रत, त्रिकोण एवं डेंश के चिह्न भी इसी कोटि में आते है। मनुष्य ने बहुत से याछच्छिक चिह्नों की खोज की है।

रसायन विज्ञान, गणित, विज्ञान आदि विशिष्ट शास्त्रों की बहुत सी अभिव्यक्ति इन माने हुए चिह्नों के द्वारा ही होती है। भाषा विज्ञान में भी बहुत से चिह्नों का प्रयोग होता हैं। जैसे { }, [ ], एवं /-

सांकेतिक चिह्नों का क्रमशः, रूपग्रामिक कोष्ठक, ध्वन्यात्मक कोष्ठक एवं ध्वनिग्रामिक कोष्ठक के अर्थ में प्रयोग होता है।

गणित, रसायनशास्त्र, भौतिकी आदि विषयों के विशिष्ट चिह्नों का उस विषय के अध्येता समान रूप से विश्वव्यापी प्रयोग करते है। यह बात दुसरी है कि इन चिह्नों के द्वारा अर्थ प्रतीति विषय–विशेष के अध्येताओं को ही हो पाती है। प्रत्येक व्यक्ति को इनसे अर्थ बोध नहीं होता। इसी प्रकार मनुष्य ने लेखन प्रक्रिया के आधार पर सांकेतिक चिह्नों की पद्धतियों भी विकसित की है। जैसे – आशुलिपि (short hand)

ब) अलिखित :– सामाजिक व्यवहार की सुविधा के लिए मनुष्य अपने जीवन में अनेक प्रतीकों का प्रयोग करता हैं। चौराहे पर खड़ा सिपाही हाथ के इशारे से यातायात को नियंत्रित करता है। वहीं कार्य बडे महानगरों में चौराहों पर यान्त्रिक प्रकाश व्यवस्था के द्वारा होता है। जिस तरफ की लाल रोशनी जलती है उस दिशा का यातायात चल पड़ता है। रेल का गार्ड भी लाल, हरी, झण्डी या बती दिखाता है, तो उसका अर्थ सब समझ जाते है। इसी तरह जब हम बैंक जाते है एक टोकन मिलता है। उस टोकन को जब हम लेकर कोषाध्यक्ष के पास आते हैं तो उस टोकन के माध्यम से बात चीत हो जाती है।

2) ध्वनि सहित:–

अ) मानव ज्ञानेन्द्रियों द्वारा उच्चारित:– मानव के जहाँ अपनी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा वाक् ध्वनियों के विशिष्ट क्रम से अपनी भाषा का निर्माण एवं अर्जन किया है। वहीं भाषाओं के उच्चारों को भी विशिष्ट अर्थ प्रदान किए है। हरियाणा ही क्या पूरे भारत के गाँवों में जब भी परिवार का वरिष्ठ व्यक्ति धुसते समय खाँसता या मठाँरता तो इससे धर की महिलाओं को उसके आगमन की सूचना मिल जाती है।

ब) अन्य साधनों के द्वारा:– मानव ने ज्ञानेन्द्रियों के अतिरिक्त अन्य ध्वनिक साधनों के द्वारा भी मानव ने सम्प्रेषणीयता के साधनों का विकास किया है। जब कोई हमारा दरवाजा खटखटाता है या हमारे दरवाजे पर लगी हुई धन्टी बजाता है तो हमें सूचना मिल जाती है कि कोई आया है।

विज्ञान में भाषा सम्प्रेषणीयता का पर्याय न होकर उसका एक प्रकार मात्र है। भाषा शब्द संस्कृत की भाषा धातु से उत्पन्न है जिसका अर्थ है कहना, बोलना, उच्चारण करना, सम्बोधित

करना, धोषणा करना, प्रकथन, बातें करना। भाषा विज्ञान में मानव की भाषा का अध्ययन किया जाता है। प्राणियों की आवाजों को भाषा की शास्त्रीयता सीमा में समाविष्ट नहीं किया जाता। आदिम अवस्था में मानव का उच्चारण पशु–पक्षियों की तरह होगा। पशुओं की चीख–पुकार की भान्ति रोता चीखता होगा। आदिम मनोभावों को अभिव्यक्ति प्राकृत एवं सहज वाक्–व्यवहार द्वारा करता होगा। जंगल में आग लग जाने पर डर कर उसकी चीख निकल पड़ती होगी।

प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य को निहारकर वह झूमकर अलाप लेता होगा। जीवन संगिनी के साथ प्रणय निवेदन के अवसर पर न केवल आंगिक चेष्टाएँ हो प्रत्युत सहज वाचिक उत्तेजनाएँ भी करता होगा। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से कहा जा सकता है कि रोना, चिल्लाना, चीखना आदि आवाजें सहज प्रतिक्रियाएं हैं किन्तु मानव भाषा के शब्द सहज प्रतिक्रिया करने वाले न होकर बाधित उत्तेजक होते हैं इस दृष्टि से रोने चिल्लाने आदि की आवाजें भाषा में अध्येय नहीं हैं

भाषा सीखने की इच्छा करने से नहीं, सीखने से आती है। इसका आधार अधिक मानसिक, अमूर्त, निजी एवं कौशलतात्मक होता हैं। मैं हिन्दी बोलता हूँ, दूसरा व्यक्ति तमिल बोलता है। ऐसी स्थिति में मुझे यदि पहले से तमिल भाषा नहीं आती तो न तो तमिल भाषा समझ सकता हूँ और न एकदम उसे सीख सकता हूँ।

पशु–पक्षियों में ध्वनि उत्पादन एवं श्रवण की क्षमताएँ होती है। यहाँ उल्लेखनीय है कि बहुत से पशु–पक्षी ध्वनि उत्पादन करने से अधिक दक्ष होते हैं तो बहुत से ध्वनि सुनने में। यह प्रतिदिन का हमारा अनुभव है कि हमारे धरों में तोता ध्वनि उत्पादन में अधिक प्रवीण होता है तो कुत्ता ध्वनि सुनने में। मनुष्य की दक्षता ध्वनि श्रवण तथा ध्वनि उत्पादन में भी। केवल ध्वनि–उत्पादन एवं श्रवण–क्षमता ही नहीं, मनुष्य में शब्दों को याद रखने की भी कमाल की क्षमता है।

विशिष्ट कार्यो के सम्पादन के लिए गुप्त भाषा एवं कृत्रिम भाषा का विकास किया जाता है। अपने सन्देश को केवल अभिप्रेत व्यक्ति अथवा व्यक्ति समूह तक पहुँचाने के लिए गुप्त भाषा का जन्म किया जाता है।

सामान्य व्यक्ति न तो इसका प्रयोग करता है और न इसे समझता है। बहुत से व्यवसायों के व्यक्ति परस्पर ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं जिन्हें अन्य व्यक्ति नहीं समझ पाते। खुफिया लोग एवं युद्ध में सेना के अधिकारी भी गुप्त भाषा का प्रयोग करते है तथा गुप्त संदेश भेजते है। अपराधी वर्ग के व्यक्ति भी गुप्त, भाषा का प्रयोग करते है। ठगों की भाषा प्रसिद्ध है। तस्करों ने भी अपनी भाषा का विकास किया है। तस्करों के अन्तर्राष्ट्रीय गिरोह है जिनमें गुप्त भाषा या शब्दों से बातचीत की जाती है। चोरों, डाकुओं आदि के भी गुप्त शब्द होते है।

विश्व में बोलियों के अतिरिक्त 2766 भाषाएं प्रयुक्त हैं। समस्त भाषा–भाषियों के मध्य संचार के लिए एक सरल भाषा के निर्माण की कल्पना से कृत्रिम भाषा का विचार उत्पन्न हुआ। विभिन्न मासिक तत्वों के आधार पर वोलपुक (volapuk), स्पेलिन (spelin), नेपो (nepo), इण्टरम्लोस (Interglossa) आदि का विकास किया गया। सन् 1887 ई में अन्तरभाषिक कार्यो के लिए एक विश्व भाषा के रूप में जमेनहोफ ने ऐस्पेरन्तो का निर्माण किया जो अपेक्षाकृत अधिक चर्चित हुई। यद्यपि यह अपने उद्देश्य को तो पूरा नहीं कर पाई फिर भी इसके बोलने वालों की संख्या 80 लाख है।

संस्कृति और संस्कार में अन्तर नहीं है जैसे विकृति और विकार में दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। प्रश्न यह उठता है कि मानव बगैर संस्कार जीवन नहीं जी सकता। जन्म और मृत्यू प्राकृतिक धटनाएँ है।

1) Mario Pai - language for everyone. pp 238-243 (1988)

2) Selected writings of otto jesperson pp 735-763, 771-782 london

हाँ, मूल्यों की सारी सम्भावनाएँ, संस्कृति की सारी सम्भावनाएँ प्रकृति में निहित तो हैं। जन्म प्राकृतिक धटना है। संस्कृति के अभाव में जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त पशु प्राकृत है। उसमें कोई बदलाव, मोड़ मूल्य का उदय नहीं देखा जाता। मनुष्य अधिकांश में (गिने–गिनाये नर–पशुओं को छोड़कर) जीवन काल में संस्कृति के उद्देश्यों को लेकर चलता है, उनके लिए सतत प्रयास करता है और यथासम्भव और यथाशक्ति उनको प्राप्त कर लेता है। प्रकृति से मुक्त और आन्नदमय सर्जना के लिए अवकाश व अवसर पैदा करने और पाने के लिए सजग–सचेष्ट बना रहता है सभी संस्कृतियों में मनुष्य का पहला संस्कार जातकर्म संस्कार होता है। जो इस मान्यता पर टिका है कि जन्म की प्राकृतिक धटना के पश्चात् जिस मानव संसार में नवजात प्रवेश करता है, वह पूरी तरह प्रकृति का संसार नहीं है वरन् संस्कृति अथवा मूल्यों का संस्कार है। पशु भी अपने प्राकृतिक ढंग से नवजात को चाटकर उसकी सफाई (संस्कार) करते देखा गया है। चाटने से उसमें रूधिर का संचार होता है और हदय को स्फूर्ति मिलती है।

परन्तु मानव नवजात की सफाई, नाल, काटना, स्नान और तुरन्त ही बाद में वस्त्र धारण कराना, गोदी में लेना सस्नेह स्तन–पान कराना आदि प्राकृतिक से कुछ बढकर और इनके पीछे विचार है। जैसे बच्चों का सुख स्वास्थ्य, शुचिता और माड्गल्य के विचार। ये सब सांस्कृतिक प्राकृतिक जीवन के मूल्य हैं।

स्तन पान कराने को ही लीजिए। नवजात के लिए यह अमृत तो माता के लिए स्नेह और गहरा सन्तोष जो दोनो ही संस्कृति के लिए महा मूल्य हैं। इसके साथ ही नवजात और प्रसूता दोनों ही परिवार और कबीला, समाज और राष्ट्र के अंग बनने के लिए प्रस्तुत हो जाते है। वे दोनों स्वयं के लिए भी मूल्य बन जाते हैं। उसे मारना पाप और अपराध है।

भारतवर्ष में जन्म से भी पहले गर्भ ग्रहण करने के संस्कार प्रारंभ हो जाते है पुसँवन, केशोतोलन आदि। आज सभी देशों में जन्म–पूर्व अनेक क्रियाएँ pre-natal-care के नाम से स्वीकार की जाती है। मनुष्य का जन्म एक महत्वपूर्ण धटना है और नवजात शिशु और उसकी माता का अपने मूल्य है, उसका प्रयोजन और सार्थकता है, संस्कृति की ही मान्यता है चाहे वह आधुनिक जन्म–पूर्व इन्जेक्शन अथवा औषधि के रूप में ही अथवा संस्कारों के रूप में नवजात शिशु अपने में मूल्य है और बड़ा होकर मूल्यों का सृजन करेगा।

पालतु पशुओं का भी संस्कार किया जाता है। अरबी, संस्कृति में तो ऊँट का जन्म समारोहों से जुड़ा होता था। अब कारों के युग में वैसा नहीं रहा। परन्तु इसका प्रयोजन प्रायः प्राकृतिक होता था। ऊँट मात्र एक साधन था, न कि स्वंयसिद्ध साध्य जैसा कि मानव समाज में नवजात शिशु होता है।

दूसरी तरफ नवजात शिशु जब बड़ा होता है तो वही भाषा बोलना शुरू करता है जो उसके वातावरण में बोली जाती है यानि कि उसके माता पिता बोलते हैं। मनुष्य की भाषा प्रतीकीकरण का पहला परिणाम है। यो कोई भी सार्थक संकेत प्रतीक बन जाता है। जैसे पशुओं का आपसी व्यवहार बोली अथवा अन्य संकेतों के सहारे चल जाता है। पुस्कोकिल की काकली उसकी कोकिला से मिलन की पुकार (mating call) है। कोकिला के लिए उसके पास आने का संकेत। मेढक का टर्राना भी वैसा ही है। मयूर की केका बादलों के आने की सूचना देती है। इन प्राणियों के ये प्राकृतिक संकेत है और उसकी प्रतीकात्मक भाषा है। परन्तु मनुष्य के लिए काकली, केका, दादुर ध्वनि आदि का अर्थ प्राकृतिक अर्थ संकेत मात्र ही नहीं है। वह काकली में मधुर कण्ठ का संगीत और वसन्त के आगमन की सूचना तन–मन में अनुभव करता है। भाषा अर्थ संकेतों का वाहन है इतना ही नही भाषा मानव की समूची मानव–सम्पति और इसके आध्यात्मिक वैभव का सृजन, सम्प्रेषण, संवहन और संरक्षण भी करती है। संस्कृति एवं संस्कार इसी मानव–सम्पति और आध्यात्मिक वैभव का नाम है जो प्रकृति के माध्यम से युगों में उसने अर्जित की है। जिसके न होने से वह दरिद्र दीन–हीन रह जायेगा।

क्या संस्कार इन दोनों प्राकृतिक धटनाओं को कोई मोड़, बदलाव अथवा मूल्य प्रदान करती है ? मनुस्मृति में लिखा है जन्मनाः जायते शुद्र, सस्कारै द्विज उच्चते–जन्म से प्रत्येक मनुष्य शुद्र पैदा होता है और संस्कारों द्वारा वह दूसरा जन्म लेकर द्विज कहलाता है। शुद्र के अर्थ अशुचि अथवा प्राकृतिक है जिसको उस युग की विचारणा ने सस्कारहीन ही नहीं, संस्कारों के अयोग्य भी धोषित किया था। संस्कारों से जीवन में मोड़, बदलाव और मूल्य पैदा ही नहीं होते, वह दूसरा जन्म प्राप्त करके द्विजन्मा हो जाता है। संस्कृति मूल्यों की चेतना है और संस्कार इस चेतना को रूपित करके स्पष्ट एवं प्रखर बनाते है। प्रकृति में ऊर्जा, गति तो है, परन्तु मूल्य–चेतना प्रकट नहीं होती, क्योंकि उसको दिशा आत्मा–चेतना से ही मिलती है। मूल्य चेतना, दिशा–बोध के बिना नहीं समझी जा सकती।

भाषा व्यक्ति को समाज के साथ जोड़ती है तथा व्यक्ति और समाज के मध्य एक प्रमुख कड़ी का काम करती है। भाषा व्यक्ति को समाज के पूर्ण कार्यकारी सदस्य के रूप में कार्य करने की सुविधा प्रदान करती है।

व्यक्ति भाषा को समाज में रहकर सीखता है। जिन मनुष्यों के बीच किसी बच्चे का पालन–पोषण होता है। उन्हीं को भाषा के आधार पर उस बच्चे की भाषा का निर्माण होता हैं। भाषा के द्वारा व्यक्ति अपने निजी व्यक्तित्व का विकास एवं उसकी अभिव्यक्ति करता है। प्रत्येक व्यक्ति के निजी व्यक्तित्व का प्रभाव उसके अभिव्यक्ति व्यवहार पर पड़ता है। भाषा परस्पर विचारों के आदान–प्रदान का माध्यम है और इसी में उसकी सामाजिक उपयोगिता एवं सार्थकता है। प्रत्येक भाषा का एक मानक रूप होता है। इसका आधार वस्तुतः सामाजिक है। किसी भाषा के जिस रूप को उस भाषा का समाज मानक मानता है वही भाषा का असली रूप होता है।

सामाजिक व्यवस्था एवं परिवर्तन से भाषा प्रभावित होती है तो दूसरी ओर भाषा का भी समाज पर प्रभाव पड़ता है। भाषा समाज नियन्त्रण का एक साधन है। सामाजिक मनोभावों को परिवर्तित करने की दिशा में प्रचार की भाषा तथा विज्ञापन की भाषा बहुत महत्व का काम करती है। समूह के द्वारा लगाये गए नारे, दीवारों पर लगाए गए पोस्टर, समाचार–पत्रों की सुर्खियाँ। रेडियों में फिल्मी गीतों के बीच–बीच में सीधे चोट करने वाले प्रचारात्मक वाक्य तथा सिनेमा हालों में विज्ञापन स्लाइडस से सारगर्मित संक्षिप्त एवं प्रभावी भाषात्मक रूपों का सामूहिक प्रभाव पड़ता है। इन माध्यमों से युद्ध के दिनों में जहाँ किसी देश को सरकार सम्पूर्ण राष्ट्र के निवासियों में राष्ट्रप्रेम जाग्रत करने का कार्य करती है। वहीं चुनाव के दिनों में अलग–अलग राजनैतिक दल जनमत को अपनी ओर मोड़ने का कार्य करते है।

किसी भी बच्चे के विकास की पारम्भिक अवस्थाओं में भाषा रहित विचार की स्थिति भी होती है तथा विचार रहित वाक् की भी। बच्चा किसी भाव को समझता है व विचार करता है किन्तु बोल नहीं पाता। इसके विपरीत बच्चा भाषा सुनता है अर्थात भाषा के ध्वन्यात्मक पक्ष को तो ग्रहण कर लेता है। किन्तु उसके साथ जुड़े हुए विचार पक्ष अर्थात कथ्य पक्ष का बोध नहीं कर पाता।

वक्ता की दृष्टि से भी विचार और उसकी अभिव्यक्ति में अन्तर होता है। हमारे मस्तिष्क में विचार, भाव, बिम्ब, उद्भूत हो जाते हैं। किन्तु कभी–कभी तन्त्रिका उतेजन के असहयोग से उसके वाचक शब्द का उच्चारण नहीं कर पाते। इस प्रकार की स्थितियों का बड़े–बड़े चिन्तक एवं विचारक को जीवन में कभी–कभी सामना करना पड़ता है।

व्यक्ति बिना बोले हुए भी प्रायः भाषा के माध्यम से ही सोचता है। बोलने की अन्तर–अवस्था में भाषा के माध्यम से व्यक्ति चिन्तन करता है। जबकि बोलने की बाह्य अवस्था में यह उस विचार को भाषा के माध्यम से प्रकट करता है।

भाषा के कारण मानव संसार के प्राणियों में सर्वोपरि है। संस्कृति के अन्य धटक अपनी अभिव्यक्ति के लिए भाषा पर आश्रित रहते है। संस्कृति भाषा में सबसे अधिक सटीक रूप में अभिव्यक्त होती है। भाषा के माध्यम से संस्कृति के धटक संगठित, परिभाषित एवं व्याख्यायित होते है।

भाषा संस्कृति का एक अंग है। प्रत्येक भाषा का सामाजिक सांस्कृतिक आवश्यकतानुसार अपने में ही पूर्ण होती है। भाषा एवं संस्कृति में गहरा सम्बन्ध होने पर भी भाषा व संस्कृति पर्याय नहीं है। यह जरूरी नहीं कि भाषा क्षेत्र की सीमा तथा सांस्कृतिक क्षेत्र की सीमा समरूप ही हो। उनकी सीमा क्षेत्र में भिन्नता भी हो सकती है। विश्व में संस्कृतियों की संख्या तथा मानव जीवन में भाषाओं की संख्या समान नहीं है। भिन्न भाषा वाले क्षेत्रों में सांस्कृतिक आदान–प्रदान व्यापक स्तर पर हो सकता है तथा अलग–अलग भाषी क्षेत्रों की समान संस्कृति हो सकती है। दक्षिण भारत के जिस क्षेत्र को इतिहासकारों ने ऐतिहासिक दृष्टि से द्रविड़ संस्कृति के नाम से परिभाषित किया है। उस क्षेत्र में तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड, तुलू आदि अनेक भाषाएं बोली जाती है।

भाषा एवं संस्कृति का मिलन– बिन्दु अर्थ–विज्ञान है। भाषा का कार्य सूचना का संवहन करना है। इस कारण भाषा विज्ञानी की

अर्थ में रूचि रहती है। एक नए विषय सांस्कृतिक भाषा विज्ञान का विकास हो रहा है।

संस्कृति–विज्ञानी भाषा के सम्बन्ध में सांस्कृति–अभिव्यक्त शब्दों एवं उसके अर्थों की जानकारी के लिए विचार करता है। भाषा–विज्ञानी शब्दार्थ, आयत शब्दावली, वर्जित शब्दावली की समस्याओं को सुलझाने तथा परिवर्तनों के कारणों तथा उसकी प्रकिया को समझने के लिए भाषा समाज के संस्कृतिक पक्ष पर विचार करता है। सांस्कृतिक भाषा विज्ञान में भाषा के सांस्कृतिक सन्दर्भों का अध्ययन किया जाता है।

सांस्कृतिक अभिव्यक्त शब्दों के बारे में संस्कृति–विज्ञानी एवं भाषा–विज्ञानी दोनों विचार करते है। किन्तु दोनों की विचार प्रकिया एवं अध्ययन पद्धति में अन्तर होता है। संस्कृति–विज्ञानी का अर्थ में प्रति रूचि सांस्कृतिक तत्वों को जानने के कारण होता है। शब्द के अर्थ का अभिप्राय शब्द के द्वारा सूचित किसी व्यक्ति, पदार्थ या विचार के प्रति उस भाषा जाति का आत्मगत तथा भाव प्रवण बोध होता है। भाषा–विज्ञानी अर्थ को जानकार भाषा की संरचना एवं व्यवस्था को जानना चाहता है तथा शब्द के अर्थ से उसका अभिप्राय वस्तु वाचक होता है।

संदर्भ

देवेन्द्रनाथ शर्मा (1966). भाषा विज्ञान की भूमिका, राधाकृष्णन प्रकाशन नई दिल्ली

रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव (सम्पादित) हिन्दी की सामाजिक सन्दर्भ केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

ब्रजेश्वर वर्मा (सम्पादक) (1969). भाषा शिक्षण तथा भाषा विज्ञान केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा

डा. विष्णु पंकज (1991). भाषाई पत्रकारिता और जनसंचार, विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर

चंद्रकुमार (2000). जनसंचार माध्यमों में हिन्दी, क्लासिकल कम्पनी दिल्ली

Corresponding Author

Deepak Rathee*

Assistant Director, Credes Media Solution Pvt. Ltd., New Delhi

E-Mail – ratheedeepak14@gmail.com